# भारत का गौरव : तमिल

- डॉ निशा मुरलीधरन
असिस्टन्ट प्रोफेसर, एस आर एम इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नॉलजी
एफ. एस. एच. , वडपलनी, चेन्नई

---

**शोध सार :**

भारत के प्राचीन भाषाओं में गिनी जाने वाली प्राचीन तमिल भाषा का महत्व अत्यंत सराहनीय और प्रशंसनीय है | तमिल भाषा का उद्भव और अन्तराष्ट्रीय स्तर में तमिल भाषा का स्थान आदि उसको विश्व में एक आदरणीय स्थान प्रदान किया है | इस भाषा के साहित्य की गहराई और व्याकरण की व्यापकता इसे विश्व के सशक्त भाषाओं में एन अद्वितीय स्थान प्रदान किया है |

तमिल साहित्य का इतिहास अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है, जिसमें काव्य, संगीत, नाटक, और दर्शनशास्त्र की महत्वपूर्ण कृतियाँ शामिल हैं। संगम साहित्य, जो तमिल साहित्य का प्राचीनतम उदाहरण है, ने न केवल तमिलनाडु, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक धारा को प्रभावित किया है। इन काव्य रचनाओं में प्रेम, युद्ध, नीति, धर्म, और सामाजिक जीवन से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें पाई जाती हैं।

तमिल भाषा न केवल अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के कारण बल्कि अपने साहित्य, व्याकरण और समृद्ध भाषिक संरचनाओं के कारण भी एक अत्यधिक सम्मानित स्थान रखती है।

**बीज शब्द :**

साहित्य, अन्तराष्ट्रीय, तोलक्काप्पियम, संस्कृति, तमिल ताई, प्राचीनतम, सांस्कृतिक विविधता ।

---

तमिल भाषा, जो लगभग 3,000 साल पुरानी है, दुनिया की सबसे प्राचीन जीवित भाषाओं में से एक मानी जाती है। इसका साहित्य अद्भुत और विस्तृत है। तमिल संस्कृति की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है उसका नृत्य और संगीत। भरतनाट्यम, जो की एक प्राचीन नृत्य शैली है, अपनी भव्यता और तकनीकी कुशलता के लिए जानी जाती है। इस नृत्य में धार्मिक भावनाओं का गहरा समावेश होता है। इसके साथ ही, कर्णाटिक संगीत भी तमिल संस्कृति का अभिन्न अंग है, जो भावनाओं और अध्यात्म का समावेश करता है।

तमिल भाषा को "तमिल ताई" के नाम से संबोधित किया जाता है, जिसका अर्थ है "माँ तमिल"। यह नाम न केवल भाषा के प्रति एक गहरी श्रद्धा को दर्शाता है, बल्कि तमिल संस्कृति में मातृत्व और नर्सिंग के महत्व को भी उजागर करता है। तमिल थाई का यह संदर्भ तमिल समुदाय के लिए गर्व का स्रोत है। इसे मातृभूमि की तरह मानते हुए, लोग इसे अपनी सांस्कृतिक पहचान और विरासत का प्रतीक मानते हैं।

तमिल भाषा की समृद्ध साहित्यिक परंपरा, अद्वितीय व्याकरण, और सांस्कृतिक विविधता इसे विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक बनाती है।

यहीं नहीं इस तमिल ताई के लिए मंदिर भी है । एक भाषा के लिए मंदिर – यह तो बहुत आश्चर्य की बात है | तमिल ताई मंदिर, जो कि तमिलनाडु के सीवगंगाई जिले के कारईकुडी में स्थित है, एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक स्थल है। यह मंदिर "तमिल थाई" (माँ तमिल) को समर्पित है और यहाँ तमिल संस्कृति और भाषा के प्रति गहरी श्रद्धा व्यक्त की जाती है। यह मंदिर अलगप्पा विश्वविद्यालय के निकट स्थित है, जिससे यह छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल बन जाता है। यहाँ पर अक्सर सांस्कृतिक

कार्यक्रम, साहित्यिक समारोह और विभिन्न आयोजनों का आयोजन किया जाता है, जो तमिल भाषा और संस्कृति के प्रचार–प्रसार में सहायक होते हैं।

तमिल साहित्य :

**तमिल के महाकाव्य**

तमिल साहित्य की समृद्धि का प्रमुख आधार उसके महाकाव्य हैं, जो न केवल काव्यात्मक रचनाएँ हैं, बल्कि सामाजिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक मूल्यों का भी चित्रण करते हैं। तमिल के ऐम पेरुम काप्पीयंगल –सिलप्पदिकारम, मणिमेगलै, कुंडलकेसी, वलयापति और जीवकसिंतमनी भारतीय साहित्य में अपनी अद्वितीय पहचान रखते हैं।

1. सिलप्पदिकारम : इस महाकाव्य को इलांगो अडिगल ने लिखा है और यह एक प्रेम कहानी है, जो मुख्य रूप से कावेरी नदी के तट पर बसे दो नगरों, मधुरै और कुंभकोणम, की पृष्ठभूमि में विकसित होती है। कहानी में कन्नगी और उसके पति कोवलन के बीच का प्रेम, धोखा, और बदला शामिल है। कन्नगी की त्याग और साहस की कहानी ने तमिल समाज में नारी शक्ति का प्रतीक स्थापित किया है। यह महाकाव्य सिर्फ एक कहानी नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और सत्य की स्थापना की दिशा में एक प्रेरणादायक संदेश है।

2. मणिमेगलै : यह महाकाव्य "सिलप्पदिकारम" के समानांतर माना जाता है और इसकी रचना सेंदुप्पिराणाणर ने की है । यह कहानी मणिमेगलाई, एक बौद्ध भिक्षुणी की है, जो अपनी जिज्ञासा और साहस के कारण विभिन्न अद्भुत अनुभवों से गुजरती है। इस महाकाव्य में धार्मिक सहिष्णुता, ज्ञान की खोज, और नैतिकता के पहलुओं को उजागर किया गया है। मणिमेगलाई की यात्रा न केवल भौतिक, बल्कि आध्यात्मिक भी है, जो पाठकों को आत्म–खोज की प्रेरणा देती है।

3. कुंडलकेसी : तमिल साहित्य की एक महत्वपूर्ण काव्य रचना है, जो काव्य, नाटक और संगीत का अद्भुत मिश्रण प्रस्तुत करती है। इसे 7 वीं शताब्दी में प्रसिद्ध तमिल कवि "अम्बिकापति" द्वारा लिखा गया माना जाता है। यह ग्रंथ न केवल काव्यात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसकी कथा और पात्र भी गहन सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ प्रदान करते हैं। कुंडलकेसी तमिल साहित्य में एक मील का पत्थर है, जो न केवल काव्य की उच्चतम परंपरा को प्रस्तुत करता है, बल्कि यह समकालीन समाज और संस्कृति के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है। यह ग्रंथ बाद के साहित्यिक कार्यों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना और तमिल साहित्य की विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। कुल मिलाकर, कुंडलकेसी तमिल साहित्य का एक अमूल्य रत्न है, जो उसकी समृद्धि और विविधता को प्रदर्शित करता है।

4. वलयापति : एक महत्वपूर्ण तमिल महाकाव्य है, जिसे कवि कन्निनुंडी ने लिखा है। यह महाकाव्य मुख्यतः प्रेम, प्रेमिका और प्रेमी के बीच के जटिल रिश्तों को दर्शाता है। वलयापति की कहानी का आधार एक प्रेमिका के अनुभवों और उसके प्रेमी के प्रति उसकी भावनाओं पर केंद्रित है। इस महाकाव्य में प्रेम, भक्ति और सामाजिक संबंधों की गहराई को सरल और सुंदर भाषा में प्रस्तुत किया गया

है। वलयापति में विभिन्न भावनाओं, जैसे स्नेह, विछोह और एकता, का वर्णन किया गया है। यह कृति तमिल साहित्य का एक अद्वितीय हिस्सा है, जो न केवल अपने काव्यात्मक गुणों के लिए बल्कि मानव संबंधों की गहरी समझ के लिए भी सराही जाती है। वलयापति अध्ययन न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह तमिल संस्कृति और परंपराओं की भी गहनता को दर्शाता है।

5. जीवकसिंतामनी : तमिल साहित्य की एक प्रसिद्ध काव्य रचना है, जो 10वीं से 12वीं शताब्दी के बीच लिखी गई मानी जाती है। इसे कवि "सिद्धार कवि" द्वारा लिखा गया है और यह एक महाकाव्य की तरह है, जिसमें विभिन्न विषयों का समावेश है।

**तमिल तोलक्काप्पियम :**

तमिल साहित्य की प्राचीनतम कृति है, जिसे लगभग 300 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी तक की अवधि में लिखा गया माना जाता है। यह ग्रंथ न केवल तमिल व्याकरण का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, बल्कि यह तमिल संस्कृति, समाज और भाषा के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

तोलक्काप्पियम का महत्व केवल एक व्याकरणिक ग्रंथ के रूप में नहीं, बल्कि यह तमिल साहित्य, संस्कृति और इतिहास का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ भी है। यह भविष्य के साहित्यिक कार्यों के लिए एक नींव के रूप में कार्य करता है और तमिल भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह तमिल संस्कृति और साहित्य का एक अमूल्य हिस्सा है, जो न केवल भाषा के विकास को दर्शाता है, बल्कि समाज के समग्र स्वरूप को भी उजागर करता है।

तोलक्कपियम में तमिल भाषा की संरचना, शब्दावली, और वाक्य विन्यास का विस्तृत विवरण मिलता है। इसमें समाज की मान्यताएँ, परंपराएँ और जीवनशैली का गहन अध्ययन किया गया है। यह ग्रंथ प्रकृति के विभिन्न पहलुओं, जैसे जलवायु, भूगोल, और जीव-जंतु के संदर्भ में भी जानकारी प्रदान करता है।

**तमिल के भूमि प्रकार : (landscapes)**

कुरंजी," "मुल्ले," "मारुधम," "नेइधल," और "पलई" तमिल साहित्य के महत्वपूर्ण भूमि प्रकार हैं, जो तमिल कवियों के द्वारा वर्णित प्राकृतिक दृश्यों और मानव भावनाओं का प्रतीक हैं। ये सभी विभिन्न प्राकृतिक परिवेशों और उनके साथ जुड़े सामाजिक और सांस्कृतिक तत्वों को दर्शाते हैं।

1. कुरुन्जी –

कुरुन्जी भूमि का परिवेश पहाड़ी और वन क्षेत्र है | काव्यों में प्रेम और विरह की भावना के लिए इसका प्रयोग किया जाता है | यह भूमि आमतौर पर पहाड़ी क्षेत्रों में उगने वाले फूलों के लिए जानी जाती है, जो प्रेम की गहराई को दर्शाते हैं।

2. मुल्ले –

मुल्लई भूमि का परिवेश बाग और उपवन है | काव्य रचनाओं में शांति और समर्पण की भावना के लिए इसका प्रयोग किया जाता है | यह भूमि विशेष रूप से उन स्थानों को दर्शाती है, जहां सुगंधित फूल खिलते हैं, और यह प्रेम और भक्ति का प्रतीक है।

3. मरुदम –

इसका परिवेश मैदान और कृषि क्षेत्र है | काव्य रचनाओं में संघर्ष और समर्पण की भावना के लिए इसका प्रयोग किया जाता है | यह भूमि कृषि और श्रमिक वर्ग के जीवन को दर्शाती है, जहाँ काम के माध्यम से प्रेम और सामाजिक जीवन का चित्रण किया जाता है।

4. नेइधल –

इसका परिवेश समुद्री तट है । काव्य रचनाओं में उदासी और यात्रा मतलब दूर चले जाने की विरह भावना के लिए इसका प्रयोग किया जाता है । यह भूमि समुद्र से जुड़ी होती है, जहाँ जीवन की चुनौतियाँ और यात्रा का चित्रण होता है, अक्सर प्रेम की बिछड़ने की भावनाओं के साथ।

5. पालई –

इसका परिवेश शुष्क और ऊसर भूमि है । काव्य रचनाओं में धैर्य और निराशा की भावना के लिए इसका प्रयोग किया जाता है । यह भूमि सूखे इलाकों को दर्शाती है, जहाँ कठिनाइयाँ और संघर्ष प्रकट होते हैं, साथ ही धैर्य और आशा की भावना भी होती है।

**तिरुक्कुरल**

तिरुक्कुरल और तिरुवल्लुवर के बारे में बताए बिना तमिल भाषा ही अधूरा रह जाएगा । यह तमिल साहित्य का अभिन्न हिस्सा है । तिरुक्कुरल, एक अनमोल तमिल काव्य ग्रंथ है, जिसे महान कवि थिरुवल्लुवर ने लिखा है। यह ग्रंथ लगभग 2,000 वर्ष पूर्व की रचना है और इसमें 1330 कुरल (श्लोक) शामिल हैं, जो तीन मुख्य विषयों पर केंद्रित हैं: धर्म (धर्मशास्त्र), अर्थ (धन) और प्रेम (काम)।

तिरुक्कुरल का धर्मशास्त्र भाग मानवता के नैतिक मूल्यों, सदाचार और नैतिकता को उजागर करता है। अर्थ भाग में धन के सही उपयोग और सामाजिक जिम्मेदारियों पर जोर दिया गया है। प्रेम भाग जीवन के व्यक्तिगत संबंधों, पारिवारिक और सामाजिक प्रेम की महत्ता को दर्शाता है।

यह ग्रंथ न केवल तमिल साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है, बल्कि इसे विश्व साहित्य में भी उच्च स्थान प्राप्त है। इसकी शुद्धता, सरलता और गहनता ने इसे हर युग में प्रासंगिक बनाया है। तिरुक्कुरल का अध्ययन जीवन को अर्थपूर्ण बनाने, नैतिकता का पालन करने और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने में सहायक है।

थिरुवल्लुवर का यह काव्य मानवता के लिए एक अमूल्य धरोहर है, जो सदियों से लोगों को प्रेरित करता आ रहा है और आज भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है।

तमिल भाषा की पौराणिकता और आधुनिकता का संगम इस भाषा को अद्वितीय बनाता है। यह केवल एक संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक धरोहर है जो हजारों वर्षों से जीवित है। तमिल साहित्य, जिसमें तिरुक्कुरल जैसे महाकाव्य शामिल हैं, ने न केवल स्थानीय बल्कि वैश्विक स्तर पर भी गहरा प्रभाव डाला है। आज की आधुनिकता में भी तमिल भाषा विज्ञान, तकनीकी, साहित्य, और कला के हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है। नई पीढ़ी के लेखक, कवि और शोधकर्ता इस भाषा को और भी समृद्ध कर रहे हैं,

जिससे यह भविष्य में भी जीवित और प्रासंगिक बनी रहेगी। इस प्रकार, तमिल भाषा भारतीय संस्कृति का एक अमूल्य गौरव है, जो समय के साथ और अधिक विस्तृत होती जा रही है।

तमिल संस्कृति भारत की सांस्कृतिक विविधता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो न केवल अपने ऐतिहासिक और साहित्यिक धरोहर के लिए जानी जाती है, बल्कि अपनी कला, संगीत, नृत्य, और परंपराओं के लिए भी अद्वितीय है। तमिल संस्कृति की गहराई और विविधता इसे एक अलग पहचान देती है, जो न केवल तमिलनाडु में, बल्कि पूरे भारत में सम्मानित है। इसे आगे बढ़ाना और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना आवश्यक है, ताकि हम अपनी जड़ों को न भूलें और सांस्कृतिक धरोहर को संजोकर रखें।

भारत की समृद्ध सांस्कृतियों में तमिल संस्कृति का योगदान इसे और भी वैभवशाली बनाता है। यह हर भारतीय के लिए गर्व का विषय है, कि हम एक ऐसी धरोहर का हिस्सा हैं, जो सदियों से विकसित होती आ रही है और आज भी प्रासंगिक है ।

---

संदर्भ :

1) तमिल इलक्कीय वरलारू – तमिल अन्नल
2) तमिल इलक्कीय वरलारू – सी बालसुब्रमणियं
3) https://en.wikipedia.org/wiki/Tamil_language